वृक्षच्छेदन विधि

वृक्ष छेदन मुहुर्त

मृगशीर्ष, पुनर्वसु, अनुराधा, हस्त, मूल, दो उत्तरा, स्वाती, श्रवण - नक्षत्रमें कृष्णपक्षमें छेदन।

वृक्षपूजन -

ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वं० ओषधयः समवदन्त० मंत्र से जलसेचन, गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य अर्पण करें। विशेषबलि अर्पण करें। वस्त्र से आच्छादित-वेष्टित करें। विविध वर्णके तंतु से वेष्टित करें।

प्रार्थना -

यानीह वृक्षे भूतानि तेभ्यः स्वस्ति नमोऽस्तु वः ।

उपहारं गृहीत्वेमं क्रियतां वासपर्ययः ॥

प्रार्थयित्वा वरयते स्वस्ति तेऽस्तु नगोत्तम ॥

गृहार्थं वान्यकार्यार्थं पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ।

आदि शङ्कर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष:9044016661

परमान्नमोदकौदन दधि पल्लोलादिभि: दशैः॥

मद्यैः कुसुमधूपैश्च गन्धैश्चैव तरुं पुनः ।

सुरपितृपिशाच राक्षसभुजगासुर विनायकाच।

गृह्णतु मत्प्रयुक्तां वृक्षं संस्पृश्य ब्रूयात् ॥

यानीह भूतानि वसंति तानि

बलिं गृहीत्वा विधिवत्प्रयुक्तम्।

अन्यत्र वासं परिकल्पयन्तु

क्षमन्तु तानद्य नमोऽस्तु तेभ्यः॥

यह प्रार्थना करते आचार्य एवं यजमान वृक्ष के पास रात्रि शयन करें। उपरि उक्त श्लोक अनुसार क्रिया करें । वृक्ष के निवासियों को अन्यत्र जाने की प्रार्थनाकरें । पश्चात् दूसरे दिन नित्यकर्म पश्चात् वृक्षको पानी देकर, कुठार पर घृत एवं मधु का लेप करें। पश्चात् पूर्व-उत्तर दिशामें प्रदक्षिणा क्रम से छेदन करें । गोलाकार छेदन करते रहें।

वृक्ष पतन दिशा का शुभाशुभ फल

आदि शङ्कर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष:9044016661

पूर्व-धनधान्य पूरित गृह,

अग्नि-अग्निदाह,

पश्चिम-पशुवृद्धि,

वायव्य-चौरभय,

उत्तर-धनागम,

ईशान-अति उत्तम फल

आदि शङ्कर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष:9044016661